प्रश्नः

''यदि परमेश्वर है, तो वह लोगों को इतने कष्ट में ज़्यों पड़ने देता है?''

उज़रः

पेरू में पृथ्वी थरथराई और हज़ारों लोग ज़मीन में दब गए। मैज़्सिको में भूकज़्प से हज़ारों लोग मारे गए। पूर्वी पाकिस्तान में आए एक समुद्री तूफ़ान से कई गांव जलमग्न हो गए जिससे लाखों लोगों की मौत हो गई। वियतनाम युद्ध में निर्दोष स्त्रियां व बच्चे मारे गए। ऑस्ट्रेलिया में, आठ साल की लड़की (विज़्की) गायब हो गई थी और एक साल बाद उसका क्षत - विक्षत शव मिला; किसी ने गोली मारकर उसकी हत्या कर दी थी, वह किसी की अमानवीय वासना का शिकार हो गई थी।

यदि परमेश्वर है, तो वह संसार में इतना दुख ज़्यों आने देता है? चिन्तन करने वाले लोग किसी बच्चे के कष्ट व युद्ध के आतंक को देखकर निष्कर्ष निकालते हैं: ''परमेश्वर होगा ही नहीं। यदि होता तो वह इतना कष्ट ज़्यों आने देता है।''

बाइबल इस प्रश्न का जवाब देती है। अय्यूब की पुस्तक पूछती है, ''धर्मी लोगों पर कष्ट ज़्यों आता है?'' भजन संहिता 73 में भजन लिखने वाले ने दुष्ट लोगों को फलते-फूलते देखा और निष्कर्ष निकाला कि धर्मी बने रहने की कोशिश करना व्यर्थ है (आयतें 3, 12, 13)। हबज़्कूक ने परमेश्वर से पूछा कि ''जब दुष्ट निर्दोष को निगल जाता है, तब तू ज़्यों चुप रहता है'' (हबज़्कूक 1:13)। या, जैसे किसी ने कहा है, ''बुराई के इतना बढ़ जाने पर भी परमेश्वर चुप ज़्यों है?''

नये नियम में जन्म से अन्धे एक आदमी के बारे में यीशु से पूछा गया था: ''हे रज़्बी, किस ने पाप किया था कि वह अन्धा जन्मा, इस मनुष्य ने, या उसके माता-पिता ने?'' (यूहन्ना 9:2)। भाग्य की बात होने पर हम अज़्सर पूछते हैं कि ''किसने पाप किया?''

इसका जवाब ज़्या है? कोई अंधा ज़्यों पैदा होता है? परमेश्वर धार्मिक जाति की

अपेक्षा दुष्ट जाति को इतना ऊपर ज़्यों उठाता है ? दुष्ट लोग फलवंत ज़्यों होते हैं ? धर्मियों पर कष्ट ज़्यों आता है ?

बेशक हम इतने सारे प्रश्नों का उज़र तो नहीं जानते, परन्तु कुछ जवाब हैं जिनसे हमारा विश्वास दृढ़ होता है।

निर्दोष लोगों पर कष्ट ज़्यों आता है?

असल समस्या इसी बात को समझना है कि निर्दोष लोगों पर कष्ट ज़्यों आता है। किसी दुष्ट व्यज़्ति पर कष्ट आने पर हमें कोई शिकायत नहीं होती। मैंने कभी किसी को यह कहते नहीं सुना, ''यदि परमेश्वर होता, तो वह हिटलर पर कष्ट ज़्यों आने देता ?''

निर्दोष लोगों पर कष्ट आने की समस्या अलग ही है। हम न्याय को ध्यान में रखकर विचार करते हैं, और निर्दोष लोगों को दण्ड मिलने की बात हमें अन्यायपूर्ण लगती है। धर्मियों पर कष्ट ज़्यों आता है ? इसके कई कारण हैं।

पहला, ज़्या पता निर्दोष लोगों पर कष्ट इसलिए आया हो ज़्योंकि कष्ट से उन्हें कोई लाभ होने वाला हो। भजनकार ने लिखा है, ''मुझे जो दुख हुआ वह मेरे लिए भला ही हुआ है, जिससे मैं तेरी विधियों को सीख सकूं'' (भजन संहिता 119:71; तु. इब्रानियों 12:11)। कई बार स्वास्थ्य के बजाय कोई बीमारी भी हमारे लिए लाभदायक हो सकती है और पीड़ा आनन्द से भी अच्छी हो सकती है। कष्ट से चरित्र निर्माण हो सकता है, सहानुभूति बढ़ सकती है, भौतिकवादी सोच कम हो सकती है जिससे हमारा ध्यान परमेश्वर की ओर हो जाए। लोगों के अपंग होने *के बावजूद* हमने उनकी बड़ी-बड़ी प्राप्तियों के बारे में सुना है। शायद हमें उनके अपाहिज होने *के कारण* प्राप्त की जाने वाली प्राप्तियों पर विचार करने की आवश्यकता है। लेखिका व लेज़्चरर हेलन कैलर शायद छोटी उम्र में ही अंधी, गूंगी, बहरी होने *के बावजूद* नहीं बल्कि इन अपंगताओं के कारण ही इस सदी की सबसे प्रेरणादायक व्यज़्ति बन पाई होगी। कष्ट को अच्छे चरित्र के प्रवेशद्वार के रूप में मानना चाहिए।

दूसरा, कष्ट पाप के कारण भी हो सकता है। संसार में कष्ट पाप के कारण ही है और पाप के कारण ही मनुष्यजाति के लिए यह अभी तक एक महामारी बना हुआ है। अय्यूब 4:8 में एलीपज़ ने एक मानने योग्य सच्चाई ही कही थी, ''मेरे देखने में तो जो पाप को जोतते और दुख बोते हैं, वही उसको काटते हैं।'' नया नियम उसकी इस बात से सहमत है: ''धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, ज़्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा'' (गलातियों 6:7)। दुष्ट लोगों पर अपने पापों के कारण कष्ट आता है, यहां नहीं तो वहां, परन्तु आएगा अवश्य (रोमियों 6:23)।

पाप की त्रासदी यह है कि दोषी के साथ-साथ निर्दोष भी पिस जाता है! व्यवस्थाविवरण 5:9 में परमेश्वर ने एक से दूसरे व्यज़्ति तक पाप के परिणाम के बारे में कहा था कि बाप-दादों की बुराई तीसरी से चौथी पीढ़ी के उनके बच्चों पर पड़ेगी। इन उदाहरणों पर विचार करें: पहिला, एक पिता शराबी है, और वह बच्चों का पालन-पोषण असंयम व चरित्रहीनता के माहौल में करता है। उसके पाप के कारण कितनी पीढ़ियों पर कष्ट आएगा ? बीमारी, निर्धनता,

समय से पूर्व मौत और मानसिक पीड़ा उसके बच्चों और पोतों पर आ सकती है। दूसरा, अबिलेन, टैज़्सस में एक नवयुवक ने तीन लोगों की हत्या कर दी, जिनमें एक युवती भी थी जो फ्रांस में मिशनरी के रूप में सेवा करती थी। यह लड़का, जो शराबी हालत में था, बहुत तेज गाड़ी चला रहा था और उसके पास ड्राइविंग लाइसेंस भी नहीं था। इन निर्दोष लोगों पर कष्ट ज़्यों आया? उस लड़के के पाप के कारण! तीन, युद्ध में दोषियों के साथ निर्दोषों को भी कष्ट उठाना पड़ता है।

पाप के कारण कष्ट आता है जिसमें निर्दोष और दोषी दोनों को दुख उठाना पड़ता है।

तीसरा, निर्दोष लोगों पर मनुष्य की निर्बलता और नश्वरता के कारण कष्ट आ सकता है। पाप से हमेशा कष्ट ही आता है, परन्तु ऐसा नहीं कि हर कष्ट का कारण पाप ही हो। यीशु ने इस अंधे आदमी के बारे में पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए समझाया ''कि न तो इस ने पाप किया था; न इसके माता - पिता ने: परन्तु यह इसलिए हुआ, कि परमेश्वर के काम उस में प्रकट हों'' (यूहन्ना 9:3)। यहूदियों में यह गलत विचार पाया जाता था कि हर प्रकार का कष्ट पाप के कारण ही आता है, परन्तु यीशु ने कहा कि ऐसा नहीं है।

कुछ कष्ट मनुष्य के गलत निर्णय लेने से भी आते हैं। वह गलत निष्कर्ष निकालता है कि वह काफी दूर तक तैरकर जा सकता है जिस कारण वह डूब जाता है। इसमें उसका कोई पाप नहीं है केवल मानवीय भूल है जिसके कारण उस पर कष्ट आता है। ऑस्ट्रेलिया में रेलगाड़ी के पटरी से उतरने से नौ लोगों की मौत हो गई थी। दुर्घटना का कारण ''मानवीय भूल'' बताया गया। मानवीय भूल से दुर्घटना होती है और निर्दोष लोगों को उस भूल के कारण कष्ट उठाना पड़ता है।

जब तक हम त्रुटिपूर्ण लोगों, या उन मनुष्यों के साथ रहते हैं जिनकी कभी भी दुर्घटना हो सकती है, तो हम उन गलतियों की अपेक्षा कर सकते हैं जिससे निर्दोष या दोषी दोनों को कष्ट हो।

चौथा, हो सकता है कि निर्दोष इस कारण दुख पाएं ज़्योंकि वे प्रकृति के नियमों के साथ उलझते हैं। वास्तव में हम प्रकृति के नियमों को तोड़ते नहीं हैं परन्तु जब हम उनकी आज्ञा का उल्लंघन करते हैं तो वे हमें तोड़ डालते हैं! गुरुत्वाकर्षण का नियम तोड़कर देखें, आपको टूटना समझ आ जाएगा!

पर भूकंप और तूफ़ान में कष्ट उठाने या मरने वाले निर्दोष लोगों पर कष्ट ज़्यों आया, जबकि साफ पता चलता है कि उन्होंने प्रकृति का कोई नियम नहीं तोड़ा था?

इस सृष्टि को एक बहुत बड़ी मशीन के रूप में देखें। इसके पहिए और दांत निरन्तर काम करते जा रहे हैं। इसमें नियन्त्रित विस्फोटक, तेज़ गति से चलने वाले पिस्टन व ठंडा और गरम करने वाले सिस्टम लगे हुए हैं। इसमें अविश्वसनीय शक्ति काम कर रही है, डाली जाती है, प्रयोग होती है और खर्च की जाती है। यह सब नियम के अनुसार हो रहा है, जिसमें से कुछ का हमें पता है और कुछ का नहीं।

हम न तो इस मशीन के आस पास और न ही उसके ऊपर बल्कि इसके *बीचों बीच* विचर रहे हैं! हम इसके कुछ नियमों, सिद्धांतों और कुछ हानियों के बारे में जानते हैं, जिससे

हम इसके गियर बदलने या पिस्टन के चलने पर पीछे हट सकते हैं। *परन्तु हमें इसकी सारी कार्यप्रणाली की समझ नहीं है और न ही हम उससे होने वाली हानि से अपने आप को बचा सकते हैं!* अंत में हम ज़्लाईव्हील (गतिचक्र) के बड़े धुरे में या गलती से पहिए के दांतों में फंस जाएं या अपने आप को उन विस्फोटकों के मध्य पाएं तो ज़्या होगा, हमारी ज़्या गलती थी? *कोई नहीं, सिवाय इसके कि हम सृष्टि की कार्यप्रणाली के रास्ते में आ गए!*

भूकंप में मारे जाने वाले लोगों की केवल यही ''गलती'' होती है। पृथ्वी के अन्दर की बहुत बड़ी शज़्ति उसे ज़ोर से हिलाती है, और वे केवल इसलिए मारे जाते हैं ज़्योंकि वहां होने के कारण वे प्रकृति की शज़्तियों के कार्य के मार्ग में आ जाते हैं।

ज़्या ऐसे समयों में हमें यह कहने का अधिकार है, ''संसार को रोक दो। मैं इसमें से निकलना चाहता हूं''? ज़्या हम तूफ़ान को यह कह सकते हैं कि हमारे बच निकलने तक वह शांत रहे? प्रकृति के नियम अपना काम करते रहते हैं, चाहे हम उनके मार्ग में हों या नहीं। जिस कारण निर्दोष लोगों पर भी कष्ट आ जाता है।

परमेश्वर हस्तक्षेप ज़्यों नहीं करता?

बहुत कम लोग इन बातों से असहमत होंगे। निर्दोष लोग कष्ट उठाते हैं और उन पर आने वाले कष्ट ऊपर गिनाए गए कारणों में से ही होते हैं। लेकिन फिर सवाल उठता है: ''यदि परमेश्वर है, तो वह कष्ट को रोकता ज़्यों नहीं?'' वह दुष्ट लोगों को निर्दोषों को सताने से ज़्यों नहीं रोकता है? वह अच्छे लोगों को गलती करने से और दूसरों की गलतियों से निर्दोष लोगों को दुखी होने को रोकता ज़्यों नहीं है? वह संसार को इस तरह नियन्त्रित ज़्यों नहीं करता कि निर्दोष लोगों को प्रकृति की शज़्तियों से कोई हानि न हो? इन दो सज़्भावित उज़रों पर विचार करें।

परमेश्वर इसलिए हस्तक्षेप नहीं करता ज़्योंकि उसके लिए आवश्यक है कि मनुष्य के स्वभाव का सज़्मान करे। मनुष्य को कुछ भी करने की पूर्ण स्वतन्त्रता दी गई है। वह जो काम करता है उसे अपनी इच्छा के अनुसार ही करता है अर्थात उसकी पसन्द कोई दूसरा तय नहीं करता। मनुष्य गलत पसन्द चुनने, अपने आप को और दूसरों को हानि पहुंचाने के लिए पूरी तरह स्वतन्त्र है। यदि परमेश्वर मनुष्य को पूर्ण मनुष्य होने की अनुमति देना चाहता है, तो उसके लिए मनुष्य को वह स्वतन्त्रता देनी आवश्यक है।

परमेश्वर मनुष्य को ऐसी स्वतन्त्रता *उसकी भलाई के लिए* देता है। ज़्या आपको रोबोट या कठपुतली बनना अच्छा लगेगा? यह स्वतन्त्रता वह *दूसरों की भलाई के लिए* देता है। हमारी स्वतन्त्रता का अर्थ यह है कि हम बलिदान करने, प्रेम करने और दूसरों की सेवा करने के लिए स्वतन्त्र हैं। यह स्वतन्त्रता हमें वह *परमेश्वर की महिमा के लिए* भी देता है। उसने मनुष्य को अपनी महिमा के लिए बनाया, परन्तु कोई दूसरा विकल्प न होने पर मनुष्य के लिए अपने सृष्टिकर्ज़ा की सेवा करने में कोई महिमा नहीं होगी।

परमेश्वर इसलिए हस्तक्षेप नहीं करता ज़्योंकि उसके लिए आवश्यक है कि सृष्टि की प्रकृति का सज़्मान करे। परमेश्वर धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर बारिश करता है (मज़ी 5:45)। जिससे धर्मी के साथ-साथ अधर्मी को भी लाभ मिलता है, और दुष्ट या अधर्मी के

साथ-साथ प्राकृतिक की शक्तियों से धर्मी को भी कष्ट उठाना पड़ता है।

परमेश्वर प्रकृति को आशीष तथा श्राप देने की अनुमति ज़्यों देता है ? पहली बात तो यह कि हम ऐसे संसार में रहते हैं जो नियमों के अनुसार चलता है। यदि परमेश्वर जान बूझकर सृष्टि के नियमों को एक ओर रख दे अर्थात केवल धर्मियों का ही पक्ष ले तो अव्यवस्था पैदा हो जाएगी। हमारा संसार ऐसा हो जाएगा जिसमें कोई नियम न हो बल्कि सब कुछ अपनी मनमर्जी से चले। ज़्या आपको यह अच्छा लगेगा ?

दूसरा, परमेश्वर प्रकृति को आशीष या श्राप देने की अनुमति इसलिए देता है ज़्योंकि कुछ लोगों को पीड़ा से छुड़ाने का अर्थ बहुत से लोगों पर पीड़ा डालना भी हो सकता है। लोगों को बहा ले जाने वाली बाढ़ का पानी जब खेतों में पहुंचता है तो उससे उपजे अनाज से हज़ारों लोगों का पेट भरता है। यदि परमेश्वर कुछ लोगों को बाढ़ से बचा लेता, तो हज़ारों लोग अकाल के कारण भूखे मर सकते थे।

तीसरा, परमेश्वर प्रकृति को आशीष और श्राप देने की अनुमति इसलिए भी देता है ज़्योंकि भौतिक रूप से धर्मियों का पक्ष लेने के कारण बहुत से लोग गलत उद्देश्यों से उसकी सेवा करने लगते हैं। यदि केवल अधर्मियों पर ही कष्ट आएं और धर्मी लोग हमेशा फलें फूलें तो परमेश्वर की सेवा कौन करेगा ? शायद कोई नहीं ! पर ज़्यों ? केवल कुछ ''रोटियों और मछलियों'' के लिए। परमेश्वर चाहता है कि लोग उसकी सेवा और महिमा सही उद्देश्य से करें।

परमेश्वर के लिए उस सृष्टि की प्रकृति का जिसे उसने बनाया है अर्थात उसके द्वारा ठहराए गए नियमों से चलने वाली सृष्टि का सज़्मान करना आवश्यक है जिस कारण वह निर्दोषों की सुरक्षा के लिए इसे तोड़ता नहीं है।

परमेश्वर ने ऐसी सृष्टि बनाई ही ज़्यों ? ज़्या वह ऐसा संसार नहीं बना सकता था जिसमें कोई प्राकृतिक आपदा कभी न आए ? इस प्रश्न के कई उज़र हैं, परन्तु उनमें से एक उज़र यह है: ''यदि आपको इतना ज्ञान है कि आप सृष्टि की रचना कर सकते हैं तो आप खुद ज़्यों नहीं कर लेते ?'' यदि हम वह नहीं कर सकते जो परमेश्वर कर सकता है, और वह नहीं जानते जो परमेश्वर जानता है, तो हमें परमेश्वर के किए हुए कामों की आलोचना नहीं करनी चाहिए।

''परमेश्वर हस्तक्षेप ज़्यों नहीं करता ?'' का एक और उज़र है कि *परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया है, और परमेश्वर हस्तक्षेप करता है !*

परमेश्वर ने मनुष्यों को एक दूसरे से प्रेम करना सिखाने के लिए अपने पुत्र को भेजकर हस्तक्षेप *किया* है। वह उन लोगों के द्वारा जो मसीह की शिक्षा को मानते हैं, काम करके मनुष्य जाति के घावों को चंगा करने में सहायता करता है। परमेश्वर अपने बच्चों की प्रार्थनाओं के कारण *हस्तक्षेप* करता है। आपको हिज़कियाह की कहानी याद होगी, जब उसे पता चला कि उसकी मृत्यु होने वाली है, तो उसने परमेश्वर से प्रार्थना की, और परमेश्वर ने उसे जीने के लिए पन्द्रह वर्ष और दे दिए थे (2 राजा 20:1-6)। आज जब हम प्रार्थना करते हैं तो परमेश्वर आश्चर्यकर्मों से जवाब नहीं देता, जैसे नये नियम के समय देता था।

लेकिन वह उन लोगों की सहायता अवश्य करता है जो उससे प्रार्थना करते हैं। उसने हमारी प्रार्थनाओं का उज़र कितनी बार दिया इसका पता तो अनन्तकाल में पहुंचकर ही लगेगा। परमेश्वर ने सृष्टि को अपने आप चलने के लिए नहीं छोड़ा है। इसे अभी भी मसीह के वश में किया गया है। परमेश्वर आज भी प्रार्थनाओं का उज़र देता है!

परमेश्वर हर प्रार्थना का उज़र ज़्यों नहीं देता? ज़्योंकि यह उसकी इच्छा के अनुसार नहीं होती। कई बार उसके उद्देश्यों के लिए अच्छा होता है कि कोई प्रिय व्यज़्ति चंगा *न* हो। इसलिए, यह विश्वास करते हुए कि परमेश्वर वही करेगा जो उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक है, हम यीशु की तरह प्रार्थना करते हैं, ''मेरी नहीं पर तेरी इच्छा पूरी हो।''

लेकिन हमारे होंठों पर तीसरा प्रश्न आता है: हमारे आस-पास इतने व्यर्थ कष्ट हैं, और कभी-कभी लगता है कि परमेश्वर को कोई परवाह नहीं है, इसलिए हम पूछते हैं ...

हमें परमेश्वर में विश्वास ज़्यों करना चाहिए?

हमें परमेश्वर में विश्वास करना चाहिए *ज़्योंकि इससे अच्छा विकल्प कोई और है ही नहीं!*

संसार में पाए जाने वाले हर कष्ट के लिए कोई संतोषजनक व्याज़्या परमेश्वर के बिना नहीं है। नास्तिक को यह मानना ही पड़ेगा कि कष्ट प्रकृति की अंधी शज़्तियों और जंगलराज अर्थात उस अस्तित्व के कारण है जिसमें व्यर्थता की अपेक्षा की जाती है। *परन्तु यह व्याज़्या संतोषजनक नहीं है!* परमेश्वर के विचार को नकारने वाले भी उज़रों और अर्थों की तलाश में हैं।

इसके अतिरिज़्त, परमेश्वर रहित संसार में होने वाली सब आशिषों का कोई कारण नहीं है। सिडनी हैरिस ने एक समाचार पत्र के लेख में इसे इस प्रकार से लिखा है:

> एक उद्देश्यपूर्ण परमेश्वर के विचार पर आपज़ि करने वालों का पसन्दीदा तर्क संसार में बुराई की ओर ध्यान दिलाना है। वे कहते हैं, ''एक परोपकारी परमेश्वर इतनी बुराई के अस्तित्व व उसके बढ़ने की अनुमति कैसे दे सकता है?''
>
> इस प्रश्न का उज़र मैं हमेशा इसके अन्दर बाहर और इन लोगों को ''भलाई की समस्या'' का प्रश्न डालकर देता हूं। वे संसार में पाई जाने वाली भलाई का कारण किसे मानते हैं? मनुष्य ... प्रेम, त्याग तथा बलिदान की ऊंचाइयों पर कैसे पहुंच पाया है? वह अपने मित्र के लिए अपना प्राण ज़्यों दे देता है? मनुष्य जाति का इतिहास ऐसे नायकों तथा शहीदों से ज़्यों भरा पड़ा है जिन्होंने अपने से बड़े किसी विचार के लिए अपने आप को स्वेच्छा से बलिदान कर दिया?
>
> हम मनुष्यजाति के अच्छे गुणों को तो मान लेते हैं परन्तु उसकी बुराइयों की निन्दा करते हैं। परन्तु मनुष्य में बिच्छू या मकड़ी से बढ़कर इतने अच्छे गुण कहां से आए? मनुष्य की कमी के लिए निन्दा करने के बजाय हमें परमेश्वर की भलाई के कारण आनन्दित होना चाहिए।

ज़्या यह सच नहीं है? ज़्या संसार में इतनी अधिक भलाई नहीं है कि हमें उस पर

आश्चर्य करना चाहिए? वास्तव में, हम कष्ट को केवल इसलिए पहचान सकते हैं ज़्योंकि हमें इतनी आशिषों का ज्ञान है! यदि आपने कभी प्रकाश न देखा हो, तो आप यह नहीं बता सकते कि अंधेरा कैसा होता है। यदि आप केवल पीड़ा के ही बारे में ही जानते हों तो आपके लिए यह बता पाना कठिन होगा कि पीड़ा कैसी होती है। यदि आप कभी स्वस्थ ही न रहे हों तो आपको यह पता नहीं होगा कि रोगी कैसे होते हैं। वास्तव में, इतनी आशिषें होने के *कारण* ही हम कष्ट के होने की शिकायत करते हैं।

प्रश्न यह है कि ये सब आशिषें आई कहां से? अचानक, व्यर्थ संसार से? शायद नहीं! अवश्य ही वे परमेश्वर की ओर से आई होंगी! मेरा दावा है कि मसीही लोगों की अपेक्षा नास्तिक व्यज़्ति के लिए यह समस्या अधिक बड़ी है। वह हमसे पूछता है, *''यदि परमेश्वर है, तो संसार में इतना कष्ट ज़्यों है?''* हम उससे पूछते हैं, *''यदि परमेश्वर नहीं है, तो इतनी आशिषें ज़्यों हैं?'' वास्तव में संसार में कोई भी भलाई यदि है तो वह ज़्यों है?*

बेशक, मसीही व्यज़्ति के लिए इस प्रश्न का जिस पर हम विचार कर रहे हैं अंतिम उज़र यही होगा: हमें इस समय तो पता नहीं हो सकता, परन्तु अन्त में पता चल जाएगा। *एक दिन हमें समझ आ जाएगी!* हमारा विश्वास है कि परमेश्वर ही बेहतर जानता है। हमारा विश्वास है कि वह अपने उद्देश्य की भलाई के लिए सब वस्तुओं को मिलाता है (रोमियों 8:28)। विश्वास से ही हम जीवन की भलाई तथा बुराई को सहने के योग्य होते हैं।

सारांश

जीवन की परीक्षाओं, निराशाओं, और कष्ट ने मसीही व्यज़्ति को दृढ़ बना दिया है। आपके विश्वास की कमी से आपका कितना भला हुआ है? ज़्या आपके संदेह से आपको जीवन मिला है? ज़्या अविश्वास से जीवन की समस्याओं में और भी भरपूरी से और विजयी जीवन जीने में आपको कोई सहायता मिली है?

ज़्या अभी वह समय नहीं आया कि आप अपने आप को परमेश्वर के आगे झुका दें? अपने आप को विश्वास तथा आज्ञाकारिता में उसके सामने समर्पित कर दें और वह आपको सज़्भाल लेगा। फिर आपको यह आश्वासन मिलेगा कि सब वस्तुएं मिलकर भलाई को ही उत्पन्न करती हैं ... आप पर कोई भी कष्ट ज़्यों न आ जाए परन्तु आपको अनन्त जीवन में परमेश्वर के साथ एक घर मिलेगा ... और एक दिन यह सब स्पष्ट हो जाएगा!